डिप्लोम इन पंच कर्म का पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र–आयुर्वेद अधिष्ठान सिद्धान्त

कुल अंक–100 (मुख्य परीक्षा–90, आन्तरिक परीक्षा–10)

1. दोष धातु उपधातु स्रोतस, अग्नि का संक्षिप्त परिचय।
2. पदार्थ विज्ञान का सिद्धान्त।
3. आयुर्वेद चिकित्सा के सिद्धान्त – दोष–दूष्य–अग्नि स्रोतस।
4. स्वस्थ की परिभाषा।
5. पंचकर्म टैक्नीशियन के सिद्धान्त एवं कर्तव्य (उपस्थाता के गुण)।
6. मन की परिभाषा एवं परिचय।
7. आयुर्वेद में अष्ट आहार विधि विशेषायतन् स्वस्थ के स्वास्थ्य का संरक्षण एवं आतुर के विकार की चिकित्सा।
8. दोष परिचय एवं दोष क्षय–वृद्धि के लक्षण।
9. दीपन, पाचन, वमन, विरेचक एवं ग्राही की परिभाषा एवं द्रव्य परिचय।
10. औषधि कल्पना परिचय, पंचविध कषाय कल्पना, क्षीरपाक–यूषपाक– यवागू पाक–स्नेह पाक एवं पुख्पाक विधियां संधान कल्पना सिद्धान्त।
11. रक्तमोक्षण के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी।
12. संसर्जन कर्म (संशोधन कर्म के उपरान्त प्रबन्धन)।

द्वितीय प्रश्न पत्र–शरीर विज्ञान

कुल अंक–100 (मुख्य परीक्षा–90, आन्तरिक परीक्षा–10)

1. रचना व क्रिया शारीर परिचय।
2. शरीरावयवों का संक्षिप्त संरचना दोष परिचय, गर्भशारीर, अस्थि शारीर, संधिया, शिरा, धमनी, स्रोतस, लसिका ग्रन्थियां, पेशी, कोष्ठाग, कला, त्वचा, मस्तिष्क मर्म।
3. पंच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पंच कर्मेन्द्रिया।
4. वक्ष, फुफ्फुस, हृदय।
5. उदर–आहारनाल, यकृत, प्लीहा, अग्न्याशय, पित्ताशय, मूत्राशय, गर्भाशय, डिम्बग्रन्थियां, वृक्क एवं अधिवृक्क ग्रन्थियां, वाह्य जननांग, उर्ध्वशाखा, अधःशाखा।

आहार–आहार पांचन क्रिया, अग्नि धातु, उपधातु, ओजस, अन्तस्रावी गन्थियाँ, रक्त संचरण, मल (पुरीष, मूत्र, स्वेद)।